Dainik Bhaskar (Indore), 23rd June 2023, Front Page – plus 04

हमारी एक और उपलब्धि • आईआईटी इंदौर के बायोसाइंसेज और बायोमेडिकल इंजीनियरिंग विभाग ने किया शोध

ईबीवी का इन्फेक्शन कैसे बनता है अल्जाइमर, आईआईटी के प्रो. ने खोजा, इस पर हो सकेंगे प्रयोग, बन सकेगी कारगर दवा

भास्कर संवाददाता | इंदौर

आईआईटी इंदौर के बायोसाइंसेज और बायोमेडिकल इंजीनियरिंग विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. हेमचंद्र झा ने अपने शोध में खतरनाक एपस्टीन-बार वायरस (ईबीवी) के उस तत्व को खोज निकाला, जो अल्जाइमर और मल्टीपल स्क्लेरोसिस जैसे मस्तिष्क संबंधी रोगों का कारण होता है। यह भी पता चला है कि वायरस में मौजूद ग्लाइको प्रोटीन एम (जीएम) के 12 अमीनो एसिड पेप्टाइड ही वे तत्व हैं, जिनकी वजह से अधिकतर लोगों को अल्जाइमर होता है। चूहों पर भी किए गए शोध में यह सिद्ध हुआ। यह पेप्टाइड जब दिमाग की सेल्स (कोशिकाओं) को प्रभावित करते हैं, तब अल्जाइमर की शुरुआत होती है।

अमेरिकन जर्नल ऑफ केमिकल न्यूरोसाइंसेस में प्रकाशन

इस शोध में डॉ. झा के साथ प्रियंका पात्रा, अनु रानी, डॉ. नेहा शर्मा और डॉ. चंद्रचूड़ मुखर्जी ने भी काम किया। यह प्रोजेक्ट वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद द्वारा वित्त पोषित है। इसका प्रकाशन अमेरिकन केमिकल सोसायटी जर्नल ऑफ केमिकल न्यूरोसाइंसेस में हुआ है। यह शोध आरआर कैट के साथ मिलकर किया गया है।

इन्फेक्शन दवा रोग की जड़ पर असर नहीं करती

डॉ. झा ने बताया अब तक साइंस में कहीं यह स्पष्ट नहीं था कि एपस्टीन-बार वायरस (ईबीवी) का इन्फेक्शन आखिरकार अल्जाइमर कैसे बनता है। यही वजह है कि इसके इलाज के लिए जो दवा दी जाती है वह इसकी जड़ पर असर नहीं करती। कई बार यह बीमारी जाकर वापस भी लौट आती है।

बीमारी की तह तक पहुंचने में शोध कारगर होगा

डॉ. झा ने बताया इस शोध के तहत हम दवा कंपनियों को वायरस मीडिएटेड अल्जाइमर डिजीज मॉडल भी उपलब्ध करवा रहे, ताकि वह इस पर काम करते हुए इस बीमारी को रोकने की दवाई बना सकें। इसके पेटेंट के लिए हम 2 साल पहले आवेदन भी दे चुके। वायरस की वजह से हुए अल्जाइमर का अध्ययन करने और बीमारी की तह तक पहुंचने में यह शोध कारगर साबित होगा। इससे बनने वाली दवा से अल्जाइमर को रोका जा सकेगा।